बौद्ध धर्म के पतन के कारण एवम् बौद्ध धर्म का विश्व के अन्य देशों में प्रसार

Decline of Buddhism in India & Continuity on Foreign Lands

Badar Ara
Professor
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005
Mob-9431877688

P.G. / M.A. IVth **Semester,**

Dept. of A.I.H. & Archaeology, Patna University

Paper- **History of Indian Buddhism** **(E.C.)**

महात्मा बुद्ध ने कहा था "जिस प्रकार जन्म का कारण होता है उसी प्रकार मृत्यु का भी कारण होता है । सत्कर्मों द्वारा ही कारणों का मूलोच्छेदन किया जा सकता है ।" तथागत की यह उक्ति बौद्ध धर्म के उत्थान तथा पतन के कारणों की सारगर्भित अभिव्यक्ति का प्रतीक है । जिस मार्ग पर चलने से बौद्ध धर्म का उत्थान तथा शीघ्र प्रसार हुआ, उस मार्ग से पथभ्रष्ट हो जाने पर यह धर्म पतनोन्मुख हो गया ।

बौद्ध धर्म के पतन के कारण

राज्याश्रय की समाप्ति- बौद्ध धर्म की अवनति का प्रमुख कारण राज्याश्रय की समाप्ति थी। कालान्तर में बौद्ध धर्म, राज्य-धर्म न रह सका । मौर्यों एवं कुषाण राज्यवंशों के पश्चात् बौद्धों पर राजकीय सहायता एवं संरक्षण अनूपलबध हो गया । हर्ष तथा पाल-सम्राटो के अतिरिक्त शेष सभी ने हिन्दू धर्म की पुनः स्थापना की ।

ब्राह्मण-धर्म की पुन: स्थापना- मौर्यवंश के पतनोपरान्त तथा गुप्त सम्राटों के उत्कर्ष के साथ-साथ ब्राह्माण धर्म के पूनरुत्थान के आन्दोलन भी अत्यधिक गतिशील हो गए । गुप्त सम्राटो ने ब्राह्मण धर्म और उसकी संस्कृत भाषा को राज्याश्रय दिया। बौद्ध-धर्म का महायान सम्प्रदाय तो ब्राह्मण-धर्म के अत्यधिक निकट आ गया था। बौद्ध धर्म की उदारता सहिष्णुता, सक्रिय सहयोग और संरक्षण से प्रभावित होकर ब्राह्मण-घर्म के विचारकों और दार्शनिकों ने ब्राह्मण-घर्म के दोषों का दूर करके उसे अधिक आकर्षक एवं उदार घर्म बना दिया। भक्तिमार्गी संतों ने भी इसी बीच भक्ति के सरल माध्यम द्वारा ब्राह्मण-धर्म को और भी लोकप्रिय बना दिया। इस सबका परिणाम यह हुआ कि वैदिक धर्म में आस्था बढ़ने लगी तथा ब्राह्मण घर्म का पुनरुत्थान होना बौद्धधर्म के पतन का कारण बन गया।

हिन्दू-धर्म का उत्थान एवं एकीकरण- ब्राह्मण-धर्म में अन्य धर्मों के सिद्धान्तों, विश्वासों, धारणाओं आदि को अपनाकर उनका समन्वय करने की विलक्षण शक्ति है । ब्राह्मण-धर्म में बौद्ध-धर्म के श्रेष्ठ सिद्धान्तों का एकीकरण कर लिया गया और बुद्ध को ईश्वर का अवतार मान लिया गया। इससे ब्राह्मण घर्म के अनुयायियों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती गयी। ब्राह्मण-धर्म की जिस शिथिलता के कारण बौद्ध-धर्म का अभ्युदय हुआ था अब स्वयं हिन्दू धर्म उस शिथिलता को दूर करने लगा। शंकराचार्य, कुमारिलभट्ट, प्रभाकर तथा रामानन्द जैसे उद्भट विद्वान एवं उत्साही प्रचारक सम्पूर्ण भारत में भ्रमण करके बोद्ध-भिक्षुओं से शास्त्रार्थ करने लगे । जनता में पुनः हिन्दू धर्म में आस्था जागृत होने लगी । समयानुसार हिन्दू-धर्म में एकीकरण की प्रवृत्ति प्रबल होने लगी। हिन्दू धर्म ने एकीकरण के प्रयास द्वारा बौद्ध-धर्म के सर्वमान्य सिद्धान्तों, नियमों एवं व्यवहारों को स्वयं में बिलीन कर लिया । परिणामतः बौद्धधर्म की पृथकता एवं नवीनीकरण का भेद समाप्त हो गया। अब वह हिन्दू-धर्म की छाया मात्र रह गया । बौद्ध मतावलम्बी धीरे-धीरे हिन्दू धर्म को अपनाने लगे तथा बौद्धों की संख्या शनैः शनै घटने लगी।

संघीय व्यवस्था का विकारप्रस्त होना तथा भिक्षुओं के आचरण की पथ-भ्रष्टता- बौद्ध संघों को राज्याश्रय प्राप्त हुआ अतः वहाँ अतुलित घन- राशि जमा हो गयी। इसके अतिरिक्त बौद्ध विहारों में उपहार एवं भेंट स्वरूप प्राप्त स्वर्ण, चाँदी रत्न तथा सम्पत्ति आदि के रूप में अत्यधिक धन इकट्ठा हो गया। फलस्वरूप विहार भोग-विलास, सुख-बैभव और षड्यंत्रों के केन्द्र बन गये । बुद्ध के अनुशासन के दस नियमों की अवहेलना की जाने लगी और भिक्षु तथा भिक्षुणियों का सादा, सरल, पवित्र, त्याग, सेवा और परोपकार का जीवन समाप्त हो गया । मगध के विहारों में हजारों भिक्षु एवं भिक्षुणियां आनन्दमय जीवन बिताने लगे । अब वे नाम-मात्र के भिक्षु रह गये थे- भिक्षा-पात्र लेकर माँगने एवं प्रचार करने की आवश्यकता समाप्त हो गयी। बौद्ध- भिक्षु पथभ्रष्ट, विलासी, कामुक एवं विलासमय जीवन में रुचि लेने लगे । विहार तथा मठों में युवक तथा युवतियों का भिक्षु तथा गिक्षुणी रूप में साथ निवास करने के कारण उन के आचरण तथा संयम में गिरावट आ गयी। अब विहारों का सात्विक एवं शुद्ध बातावरण समाप्त हो गया। इससे जनसाधारण की दृष्टि में बौद्ध-भिक्षुओ के प्रति श्रध्दा विनष्ट हो गयी तथा बौद्ध संघ और विहारों का पतन होने लगा।

बौद्ध घर्म में दोषों का प्रवेश- बौद्ध-घर्म का प्रादुर्भाव और प्रचार एक सादे, सरल सुबोध धर्म के रूप में हुआ था किन्तु कालान्तर में वह विविध नियमों और निषेधों से परिपूर्ण हो गया। इस का कठोर अनुशासन एवं संघ का संयमी जीवन इसके मानने वालों के लिए कष्टकारक हो गया। परिणामस्वरूप अनेक बौद्ध धम्मावलम्बियों ने अन्य धर्म अपना लिए । इसके अतिरिक्त जिन दोषों के विरुद्ध महात्मा बुद्ध ने आवाज उठायी थी वे ही धीरे-धी रे बौद्ध धर्म में प्रवेश करने लगे । महात्मा बुद्ध के सरल एवं बोधगम्य उपदेशों के स्थान पर मूर्तिपूजा, रथोत्सव तथा अन्य संस्कार आदि प्रचलित होने लगे । धर्म की सरलता नष्ट हो गयी तथा ढकोसलों, अन्धविश्वासों एवं मिथ्याचार ने प्रवलता धारण कर ली । बौद्ध आचार्य सैद्धान्तिक मतभेदों का शिकार होने लगे तथा इनमें आपस में प्रतिस्परध्धा एवं द्वेष की भावना उत्पन्न हो गयी। एक

तरफ तो कुछ बौद्ध भिक्षु घोर अनीश्वरवादी हो गये, दूसरी ओर अनेक की देवस्व के प्रति श्रध्दा भी हो गयी । फलतः बौद्ध-धर्म में अनात्मवाद और अनीश्वरवाद या उसकी नारितवता की प्रवृति से अनेक लोग बौद्ध-धर्म से अलग हो गए थे इस प्रकार बौद्ध-धर्म अपने उच्च आदश्शों से गिर कर पतनोन्मुख हो गया।

सम्प्रदायों का जन्म - कालान्तर में बौद्ध मतावलम्बियों में कई गहन सैद्धान्तिक मतभेद हो गये। बौद्ध-धर्म में सम्प्रदायवाद जन्म ले चुका था जिसके कारण संघ छिन्न-भिन्न होने लगा। महात्मा बुद्ध की मृत्योपरान्त ही संघ भेद की आशंका से प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया था। मतभेद का क्रम बढ़ता ही गया तथा चार संगीतियों के आयोजन द्वारा भी विघटनकारी प्रवृत्तियाँ नष्ट नहीं हुई। पाचवी शताव्दी में बौद्ध-धर्म अट्टारह सम्प्रदायों में विभक्त हो चुका था । इनमें हीनयान, वज्त्रयान तथा महासांचिक प्रमुख हैं । इस सम्प्रदायवाद ने बौद्ध धर्म को आन्तरिक रूप से जर्जरित कर द्रिया । फलतः बौद्ध-धर्म से लोगों की आस्था उठ गयी।

बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों में परिवर्तन- शनैः-शनैः बौद्ध घर्म के मूल सिद्धान्त परिवर्तित हुए और नये-नये सम्प्रदायों का उदय हुआ, जैसे महायान, मन्त्रयान, तन्त्रयान, वज्रयान आदि । इन नवीन परिवर्तनों के अन्तर्गत बुद्ध और बोधिसत्वों की मूर्तियां निर्मित कर पूजी जाने लगीं। इस मत का प्रतिपादन किया जाने लगा कि बुद्धदेव की मूर्ति की पूजा, अचंना और भक्ति मात्र से ही निर्वाण प्राप्ति हो सकती है । वज्रयान सम्प्रदाय के अन्तर्गत बौद्ध धर्म में हठयोग,तन्त्र, मन्त्र, मृरा, सुन्दरी और भोगविलास का प्रवेश हुआ जो बोद्ध-धर्म की नैंतिकता के सर्वदा विपरीत थे। बौद्ध भिक्षू और विद्वान अब सरल, पवित्र एवं सन्यासी न रहे । वे तन्त्र-मन्त्र, जादू-टोने के निपुण पंडित हो गए और वे अनतिक आचरणों की ओर प्रेरित हुए । वे तन्त्र- मन्त्र द्वारा ब्रह्म और आत्मा सम्बन्धी शक्तियों और आध्यात्मिक र्तापात करने का दावा करने सगै । फलत: बौद्ध धर्म की समस्त पवित्रता और नै तिकता नष्ट हो गयी और बौद्ध विहार तन्त्र-मन्त्र, जादू-टोने के गढ़ बन गए । वे अपने उच्च आदर्शो से गिर गए और उन्होंने अपना गौरव खो दिया। प्रभावशाली बौद्ध धर्माचार्यों और दार्शनिकों का अभाव-बौद्ध धर्म में पँचवीं शाताब्दी के बाद प्रकाण्ड विद्वान, प्रख्यात धर्मपरायण भिक्षु और दार्शनिकों का अभाव हो गया। बौद्धों का संगठन करने और उनकी शक्ति को बढ़ाने के लिए योग्य, अनुभवी संगठनकर्ता भी नहीं थे । इसके विपरीत इस युग में ब्राह्मण धर्म के शंकराचार्य, कुमारिल भट्ट, रामानुज आादि के समान बौद्ध धर्म में प्रसिद्ध प्रभावशाली विचारक, दार्शनिक, धर्म-प्रचारक और घर्मावार्य नहीं थे जो जन साधारण को प्रभावित कर सकते और धर्म प्रचार में पूर्ण योगदान देते । बौद्ध-धर्म में व्याप्त दोषों को दूर करने के लिये इस यूग में कोई धार्मिक संगीति, सभायें भी नहीं हुए जो संघ में फेले भ्रष्टाचार का निवारण करते और बौद्ध धर्म की पुरातन शुचिता, सरलता और ग्राह्यता को पुनः स्थापित करते ।

राजपूतों का अभ्युदय - राजपूतों का अभ्यूदय भी बौद्ध घर्म के पतन का कारण बना । राजपूत-जाति स्वामिमानी स्वतन्त्रता प्रिय थी । उनके अनुसार हिसा निष्क्रियता को जन्म देती है। उनकी युद्धप्रियता, आखेट में रुचि तथा सामरिक गुणों की प्रधानता बौद्ध-धर्म के अहिसा एवं

सदाबार के प्रतिकूल थी । अतः राजपूतों ने सचचे हृदय से ब्राहयण-धर्म को संरक्षण प्रदान किया तथा बौद्ध-धर्म का विरोध किया।

बौद्ध धर्म का उपरोक्त अध्ययन करने के उपरान्त अन्त में हम कह सकते हैं कि बौद्ध धर्म भारतीय संस्कृति का प्रमुख वाहक रहा है । इस धर्म के बड़े -बड़े विद्वान हुए और तर्क-वितर्कों के माध्यम से बौद्ध धर्म का खुब प्रचार प्रसार हुआ। फिर भी इस कारण से बौद्ध धर्म में अनेक मतभेद भी रहे । इस धर्म का पतन भी भारत में हुआ। वस्तुतः बोद्धों के अनीश्वरवाद, अनात्म-वाद भारतीय जन पर दीर्घकाल तक प्रभावी नहीं हो पाया। हिन्दू धर्म के प्रति विद्रोह-भावना के कारण बौद्ध धर्म का प्रभाव भारत में शनैः शनैः कम होने लगा । भिक्षु-भिक्षुणियों के अनाचार के कारण बौद्ध संत्र, मठ, विहार, संघाराम अपवित्र होने लगे जिससे इस धर्म के प्रति जनता की अरुचि भी बढ़ती गई । वज्रयान के उदय के साथ तन्त्र का प्रभाव बढ़ने लगा। तामसी प्रवृत्तियों के प्रति बौद्धों की आस्था बढ़ती गई शंकर, कुमारिल, मण्डल मिश्र आदि हिन्दू दार्शनिकों ने हिन्दू धर्म की ऐसी व्यापक व्याख्या की कि लोग उसकी सहजता और सरलता से आकृष्ट होकर बौद्ध धर्म को भुलने लगे । फलतः बौद्ध धर्म का ह्रास स्वतः प्रारम्भ हो गया।

विदेशियों के आक्रमण - बौद्ध-धर्म की रही सही शक्ति का नाश हूणों एवं मुसलमानों के आक्रमण ने कर दिया । तुर्कों के बर्बर आक्रमण के समक्ष नंतिक एवं आचार की दृष्टि से शिथिल बौद्ध-धर्म जनता में विश्वास एवं आस्था की ज्योति नहीं ,जागृत कर सका। जनता के लिए अहिसा का अर्थ केवल अत्याचार का सहना मात्र रह गया। तुर्कों ने बौद्ध-मठों, बिहारों तथा ब्राहमणों के मन्दिरों को विनष्ट किया परन्तु हिन्दू-धर्म के उपदेशकों ने अपनी शिक्षाओं को नैतिकता एवं सदाचार की श्रृखला में जकड़ कर, जनता का आदर एवं श्रद्धा प्राप्त को । यही कारण है कि हिन्दू-मन्दिरों का तो पुनरुद्धार हो गया परन्तु एक बार विनष्ट हो जाने पर बौद्ध-मठ एवं विहार खण्डहर ही बन कर रह गए, उनका पुनरुद्धार न हो सका । इन आक्रमणकारियों ने अधिकतर उत्तर भारत पर ही हमले किये । अतः मगध के महाविहार, संधाराम के नष्ट हो जाने पर भिक्षुओं का जीवन निराक्रपपूर्ण हो गया इसके विपरित रामानुज एवं शंकराचार्य जैसे प्रवल हिन्दू प्रचारकों के केन्द्र दक्षिण भारत की ओर थे, अतः वे आक्रमणकारियों से सुरक्षित रहे । इन आक्रमणकारियों का यह विश्वास था कि बौद्ध-संघों एवं मठों के पास अपार धन है अतः उन्होंने नालन्दा के सुप्रसिद्ध बिहार एवं विश्वविद्यालय को नष्ट कर दिया। इससे बौद्ध-धर्म को अपार क्षति पहुँची । नैतिक दृष्टि से पतित एवं शक्तिहीन भिक्षु मुसलमानों का सामना न कर सके तथा भारत छोड़ कर भाग निकले ।

बौद्ध धर्म का विश्व के अन्य देशों में प्रसार

अशोक के शासन-काल में उसके पूत्र महेन्द्र और पूत्री संघमित्रा बौद्ध धर्म के प्रचारार्थं लंका गये थे । उसके समय में अन्य बौद्ध धर्म-प्रचारक मध्य एशिया तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में गए धीरे-धीरे बौद्ध घर्म ने मध्य एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया में धूम मचा दी। वह यूरोप तक पहुँच गया। बौद्ध धर्म के प्रति वणिकों ओर व्यापारियों की रुचि अधिक थी । ये व्यापारी समुद्र पार करके व्यापार-वाणिज्य के हेतु सुदूर प्रदेशों को जाया करते थे । उन

देशों में वे व्यापार के साथ-साथ बौद्ध धर्म का प्रचार भी करते थे । धर्म-प्रचारकों द्वारा भी बौद्ध धर्म का विवव्यापी विस्तार हुआ । सोपागा और सेलेबीज द्वीप समूहों से मिली चौथी-पाँचवीं सदी ई० की बुद्ध की मूर्तियाँ इस बात प्रमाण हैं कि उन देशों में चौथी सदी ई० के पूर्व किसी समय बौद्ध धर्म का प्रचार हो चुका था । कहा जाता है कि बोनियो द्वीप के नामकरण में बौद्ध व्यापारियों का ही योगदान रहा है ।

मलाया में भी बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ था । चम्पा (अन्नम्) के द्रोंग-दुओंग से मिली अमरावती- शैली की बुद्ध की मूर्तिया और उसी शैली की कांसे की मूर्ति बौद्ध धर्म के प्रसार का प्रमाण प्रस्तुत करती है । पहली शताब्दी ई० से ही दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में बौद्ध धर्म का प्रचार होने लगा था । कालान्तर में श्रीविजय साम्राज्य ने बौद्ध धरमं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । श्री-विजय बौद्ध धर्म और विद्या का प्रधान केन्द्र-स्थल बन गया । दक्षिण पूर्वी एशिया की भांति मध्य एशिया भी बौद्ध धर्म और शिक्षा का प्रधान केन्द्र बन गया था बख्त्र, सुद्ध और तारिम घाटी के नलिस्तानी राज्य में अनेक बौद्ध विहार और संघाराम थे । तजाक्िस्तान से मिली बुद्ध की विशालकाय मूर्तियाँ तथा बौद्ध धर्म के अवशेष यह स्पष्ट करते हैं कि सम्राट् कनिष्क के समय प्रथम सदी में बौद्ध धर्म उन प्रदेशों में फैल चूका था । तारिम घाटी के दक्षिणी व्यापार-पथ पर पश्चिम से पूर्व तक सारिकोल में 10 विहार और 500 भिक्षु, वूशा में 10 विहार और 1000 भिक्षु, काशगर में कई सौ विहार और 10,000 भिक्षु खोतान में 100 विहार और 5000 भिक्षु, निया और तुखार देश में अनेकानेक विहार और स्तूप, चलमदान में 100 बौद्ध परिवार, क्रोटेना में अनेक बौद्ध स्तून और विहार तथा चकेलीक में 4000 भिक्षु निवास करते थे । तारिम घाटी के ही उत्तरी व्यापार-मार्ग पर पश्चिम से पूर्व की ओर अकसू (मरुक) में 10 विहार और 2000 भिक्षु, रहते थे तथा तुर्फान में राजमहल के निकट एक विशालकाय बौद्ध विहार निर्मित था । चीन के कानसू प्रा।न्त की सीमा पर तुन ह्वांग स्थान पर बौद्धों का प्रधान केंद्र था । वहाँ की पहाड़ी गुफाओं में अनेक मूर्तिया चित्र आदि हैं । यहाँ से अनेक बौद्ध ग्रन्थ भी प्राप्त हुए हैं । यहाँ से होकर बौद्ध धर्म के प्रथम प्रचारक काश्यप मातंग और धर्म रक्ष (धर्म रत्न) चीन की राज-धानी चङगान गये थे । चीन से फाहियान, युवानच्चांग, सुंग-युन और इत्सिंग जेसे यात्री भारत आकर बौद्ध धर्म सम्बन्धी साहित्य संकलन कर तथा ज्ञान प्राप्त कर चीन लौटे थे तथा वहाँ बौद्ध धर्म की शिक्षा प्रदान की । बौद्ध धर्म चीन से ही कोरिया और जापान गया । तिब्बत में बौद्ध विद्वान तारानाथ बहुत प्रसिद्ध थे । अरब लेखक अलबेरुनी (ग्यारहवीं सदी) ने लिखा है कि मुसलमान होने से रहूते ईरन इसाक जेतेदेसों के निवासी बौद्ध थे । यूरोप में रूमानिया के मोलदावा प्रदेश से बौद्ध ग्रंथ 'प्रज्ञापारमिता के दो काले पृष्ठ प्राप्त हुए हैं । स्कन्डिनेविया में स्वीडेन की राजधानी स्टाकहोम के निकट हेलगो द्वीप में कमलासन पर पथासन में बैठे बुद्ध की मूर्ति प्राप्त हुई है । यही नहीं, ईसाई धर्म के अनेकानेक आरूपानों पर बोद्ध धर्म का प्रभाव है । बारलम और जोसाफत के आर्यानों में बोधिसत्व के विवरण प्राप्त हुए हैं उपरोक्त प्रमाणों तथा तथ्यों से स्पष्ट होता है कि बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार विश्व के विभिन्न देशों में हुआ था ।